Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन

ओम प्रकाश
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, डिर्पाटमेण्ट ऑफ स्पेशल एजुकेशन (एच.आई.)
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ0प्र0)

सारांश

अध्ययनकर्त्ता द्वारा शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन के उद्देश्य में नैराश्य एवं उसकी विमा प्रतिगमन की भावना, स्थरण की भावना, समर्पण की भावना और आक्रामक प्रवृत्ति का अलग–अलग तुलना किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है। जनसंख्या के रूप में चित्रकूट जनपद के विशेष शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं का जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए प्रतिदर्श (न्यादर्श) की विभिन्न विधियों में से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि को आधार बनाया गया है। तत्पश्चात् शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् 15 पुरुष एवं 15 महिला प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है। डा0 एन0एस0 चौहान' एवं गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित 'नैराश्य मापा' का प्रयोग किया है। अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि–

1. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य एवं उसकी विमा प्रतिगमन एवं स्थरण की भावना में अन्तर नहीं है।
2. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा समर्पण की भावना में .05 सार्थकता स्तर पर अन्तर पाया गया अर्थात् महिला प्रशिक्षुओ में समर्पण की भावना पुरुष प्रशिक्षुओं की अपेक्षा अधिक है।
3. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा आक्रामक प्रवृत्ति में अन्तर है अर्थात् पुरुष प्रशिक्षुओं में आक्रामक प्रवृत्ति महिला प्रशिक्षुओं की अपेक्षा अधिक है।

मुख्य शब्द– शिक्षक–प्रशिक्षण, महिला–पुरुष प्रशिक्षु, नैराश्य एवं उसकी विमा प्रतिगमन की भावना, स्थरण की भावना, समर्पण की भावना और आक्रामक प्रवृत्ति, तुलना।

प्रस्तावना–

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन हैं, इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता हैं। मानवीय शक्तियों के विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती हैं। प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं, आदर्शों और दर्शन के अनुभव विशिष्ट शैक्षिक व्यवस्था की संरचना बनाता हैं, इस संरचना में विगत के अनुभवों से लाभ लेकर प्रतयेक राष्ट्र वर्तामन शैक्षिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है, क्योंकि शिक्षा वह प्रक्रिया है जो राष्ट्र के नागरिकों में राष्ट्रीय चरित्र का विकास कर राष्ट्रीय संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप राष्ट्र को नए नागरिक प्रदान करने में सहायक होती है। व्यक्ति के सामाजिककरण, राष्ट्रीयकरण अथवा आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि शिक्षित व्यक्ति स्वयं में प्रगति का द्योतक है। ज्ञान प्राप्ति का एक प्रमुख साधन है शिक्षा, और शिक्षा के एक अभिकरण के रूप में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं– शिक्षक। क्योंकि बालक शिक्षा से शिक्षा ग्रहण करता है।

बालकों की शारीरिक क्षमता के आधार पर उन्हें मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जाता हैं, एक तो वे विद्यार्थी होते हैं जो शारीरिक रूप से पूर्णतया स्वस्थ होते हैं तथा उनमें किसी भी प्रकार की विकृति नहीं पाई जाती है, इस प्रकार के बालक सामान्य बालक कहलाते हैं। सामान्य बालकों की क्षमता, रूचियाँ, योग्यता, आत्मविश्वास, अभिप्रेरणा आदि योग्यताएँ सामान्य या उससे अच्छी पाई जाती है तथा ये वातावरण के साथ शीघ्र समायोजन करने में सक्षम होते हैं। बालकों का दूसरा वर्ग उन विद्यार्थियों का होता है जो शारीरिक रूप से दिव्यांग होते हैं अर्थात् इन बालकों में कई प्रकार की विकृतियाँ पाई जाती है तथा ये असामान्य होते हैं और सामान्य बालकों की तरह पूर्ण क्षमता से कार्य करने में सक्षम नहीं होते हैं।

नैराश्य की उत्पत्ति दो प्रकार से होती है एक तो तब जब व्यक्ति निश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहता है किन्तु बाधाएं नहीं प्राप्त करने देती है। दूसरी स्थिति तब आती है जब व्यक्ति के समक्ष कोई निश्चित लक्ष्य नहीं रहता है जैसे आज का युवा लक्ष्यहीन है उसे क्या पढ़ना है क्या करना है क्या बनना है, कहाँ पहुंचना है कैसे पहुंचना है? आदि। युवा लक्ष्यहीन, दिशाहीन, कुण्ठित और असन्तुलित एवं अव्यवस्थित होकर जहाँ जगह मिल जाती है वहाँ फिर होने की कोशिश करता है लेकिन सन्तुष्टि के आभाव में तनाव से घिर जाता है।

जब व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से हो जाती है तो उसे सन्तोष का अनुभव होता है किन्तु जब लक्ष्य प्राप्ति करने में उसे बाधाओं का सामना करना पड़ता है तो उसे एक अप्रिय अनुभूति होती है, जिसे नैराश्य, असन्तोष, हताशा, निराशा कहते है। इसी प्रकार जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं और रूचियों के

प्रतिकूल शक्तियों का सामना करना पड़ता है तो उसके अन्दर मानसिक द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार नैराश्य और मानसिक द्वन्द के परिणामस्वरूप व्यक्ति में मानसिक तनाव उत्पन्न होता है तनाव के कारण व्यक्ति के मन में एक प्रकार की उथल–पुथल मच जाती है। जिसे दूर करने के लिए वह बाधाओं को दूर करने में सफल रहा तो वह वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेता है। वहीं व्यक्ति यदि बाधाओं को दूर करने में असमर्थ रहा और उसने आवांछनीय मार्ग को अपना लिया तो कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है।

वर्तमान में शिक्षक–शिक्षण कार्यक्रमों में जहाँ सामान्य विद्यार्थियों के लिए बी0एड0 कार्यक्रम में जहाँ सामान्य प्रशिक्षणार्थियों को समायोजन करने में दिक्कत नहीं होती है तो वहीं उनमें चिन्ता, नैराश्य, तनाव, अवसाद आदि कम पाया जाना स्वाभाविक है वहीं दिव्यांग प्रशिक्षणार्थियों को परिवार, समाज एवं विद्यालय के साथ–साथ महाविद्यालयों में भी अपने को समायोजित करने में दिक्कत होती है। शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में दिव्यांग प्रशिक्षणार्थियों को पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि एवं शिक्षक के साथ–साथ सामान्य प्रशिक्षणार्थियों का उनके प्रति अच्छा व्यवहार न होना भी उनके समायोजन में परेशानी होती है और यही कुसमायोजन उनके अन्दर नैराश्य उत्पन्न करती है। जहाँ दिव्यांग प्रशिक्षणार्थी स्वयं अपने दिव्यांग के कारण जीवन में कुण्ठित होता है और वहीं जब उनके लक्ष्य के पास आकर नैराश्य या तनाव अधिक बढ़ जाये तो क्या वे एक कुशल शिक्षक बन पायेंगे।

कुछ शोध द्वारा इंगित होता है कि नैराश्य का बढ़ना तनाव को बढ़ाता है जिसका प्रभाव उसके मनोवैज्ञानिक चरों पर पड़ता है। **श्रीवास्तव (1990)** ने निष्कर्ष रूप में पाया कि समान प्रभावशाली समूह में तनाव अत्यधिक प्रभावित करता है। **हेल्मर्स एवं अन्य (1997)** ने प्रस्तुत शोध में निष्कर्ष रूप में पाया कि – लम्बा प्रशिक्षण तथा विषयी–कार्यों तथा चारित्रिक शीलगुण के कारण छात्रों में तनाव पैदा होता है। **तिवारी (1999)** ने निष्कर्ष रूप में इन्होंने पाया कि अन्तिम वर्ष के छात्रों में प्रथम वर्ष की अपेक्षा अधिक तनाव था। **जयसवाल (2003)** ने निष्कर्ष में पाया कि कोर्स कार्यों का दबाव छात्रों में तनाव उत्पन्न करता है। **पुटविन (2006)** ने शोध में पाया कि परीक्षा सम्बन्धी तनाव छात्रों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को गम्भीर रूप से प्रभावित करता है। **बर्जेसनिवस्की (2007)** ने इन्होंने पाया कि संवेगात्मक अनुक्रियाओं द्वारा तनाव को अनुगामी दिशा में चरमावस्था पर पहुंचाया जा सकता है। **वायर्ने (2007)** ने निष्कर्ष रूप में पाया कि तनाववबोधगम्यता एक सीमा तथा सकारात्मक होता है जब उस सीमा को तनाव पार करता है तो बोधगम्यता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **परवीन (1994)** ने निष्कर्ष रूप में इन्होंने पाया कि – चिन्ता, तनाव तथा मधुमेय का व्यक्तित्व प्रतिरूप से नकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित था जो समायोजन की प्रक्रिया में स्पष्ट रूप से दिग्दर्शित होता था। **असवाल (2002)** ने निष्कर्ष रूप में इन्होंने पाया कि विभिन्न प्रकार के सामाजिक स्तरों में तनाव के अलग–अलग कारण रहे जो उनके जीवन जीने के तरीके को प्रभावित करते हैं। **सिंह, भारती (2018)** ने अध्ययन में पाया कि– नेत्रहीन व बधिर बालकों में नैराश्य विभिन्न पक्षों के प्राप्ताको ंके अध्ययन करने पर दोनों मे ंप्रतिगमन की प्रवृत्ति में कोई अन्तर नहीं पाया गया। जबकि स्थरण में

.05 स्तर पर अन्तर पाया गया समर्पण की प्रवृत्ति नेत्रहीनों में अधिक पाई गई जबकि आक्रमण की प्रवृत्ति नेत्रहीनों की अपेक्षा बधिर बालकों में अधिक पाई गयी।

अतः विद्यार्थियों में नैराश्य का प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है जो विभिन्न शोधों द्वारा इंगित होता है। **कुमार, विनय एवं पाण्डेय, सीमा (2015)** ने सामाजिक परिवक्वता तथा आत्मविश्वास का कुण्ठा के स्तर से ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। **रानी एवं देसवाल (2015)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया– सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के कुण्ठा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं ऋणात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात् कुण्ठा बढ़ने पर शैक्षिक उपलब्धि में कमी पायी गयी।

इसी प्रश्न के उत्तर को ढूँढने के लिए अध्ययनकर्त्ता द्वारा अपने विषय में शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

समस्या कथन–

''शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा प्रतिगमन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा स्थरण की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा समर्पण की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा आक्रामक प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा प्रतिगमन की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा स्थरण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा समर्पण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा आक्रामक प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है।

जनसंख्या–

जनसंख्या के रूप में चित्रकूट जनपद के विशेष शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं का जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए प्रतिदर्श (न्यादर्श) की विभिन्न विधियों में से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन (Stratified Random Sampling) विधि को आधार बनाया गया है। तत्पश्चात् शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् 15 पुरुष एवं 15 महिला प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है।

उपकरण–

डा0 एन0एस0 चौहान' एवं गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित 'नैराश्य मापा' का प्रयोग किया है। इस नैराश्य उपकरण में कुल 40 प्रश्न हैं जो कि चार नैराश्य प्रकारो ं से सम्बन्धित है ंये चार नैराश्य प्रकार इस प्रकार हैं–

1. प्रतिगमन की भावना
2. स्थरण की भावना
3. समर्पण की भावना और
4. आक्रामक।

सांख्यिकी विधियाँ–

अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन–

H_{01} शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 1

Sex	Male	Female
N	15	15
M	129.47	127.67
S.D.	10.74	18.12
D	1.80	
SE_D	5.63	
C.R.	0.32	
	(0.05) =2.05	**(0.01) =2.76**

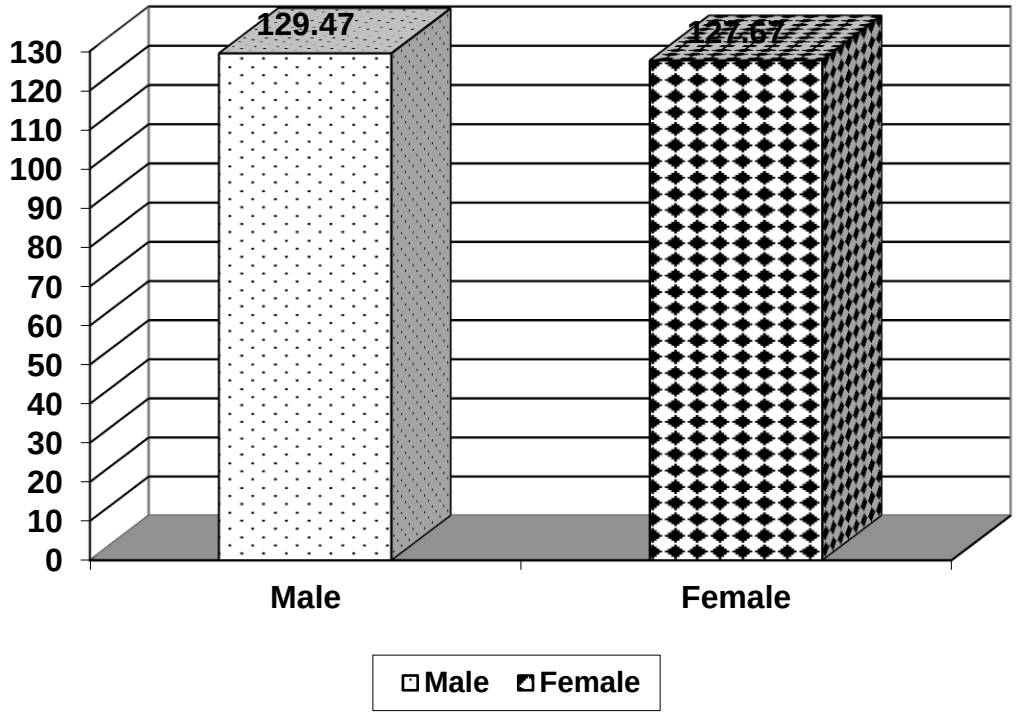

शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य के मध्यक्रमों के बीच अन्तर लगभग 2 का है। अन्तर की सार्थकता का क्रान्तिक मान 0.32 प्राप्त हुआ जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 2.05 एवं 2.76 अपेक्षित है, से कम प्राप्त हुआ। अतः प्राप्त क्रान्तिक मान 0.05 एवं 0.01 स्तर पर असार्थक है। अतः परिणामतः शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

2. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा प्रतिगमन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन–

H_{02} शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा प्रतिगमन की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 2

Sex	Male	Female
N	15	15
M	31.67	31.80
S.D.	6.91	8.30
D	0.13	
SE_D	2.9	
C.R.	0.04	
	(0.05) =2.05	**(0.01) =2.76**

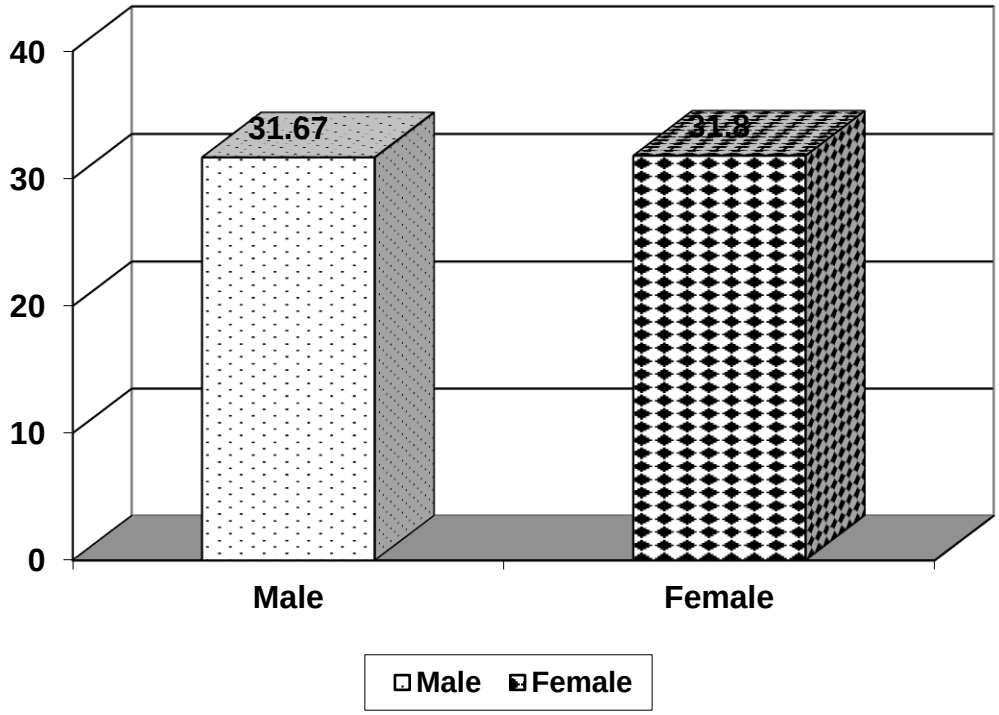

शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा प्रतिगमन की भावना के मध्यक्रमों के बीच अन्तर लगभग न के बराबर है। अन्तर की सार्थकता का क्रान्तिक मान 0.04 प्राप्त हुआ जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 2.05 एवं 2.76 अपेक्षित है, से कम प्राप्त हुआ। अतः प्राप्त क्रान्तिक मान 0.05 एवं 0.01 स्तर पर असार्थक है। अतः परिणामतः शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा प्रतिगमन की भावना में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा स्थरण की भावना का तुलनात्मक अध्ययन–

H_{03} शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा स्थरण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 3

Sex	Male	Female
N	15	15
M	31.87	30.67
S.D.	5.66	7.27
D	1.20	
SE_D	1.51	
C.R.	0.79	
	(0.05) =2.05	**(0.01) =2.76**

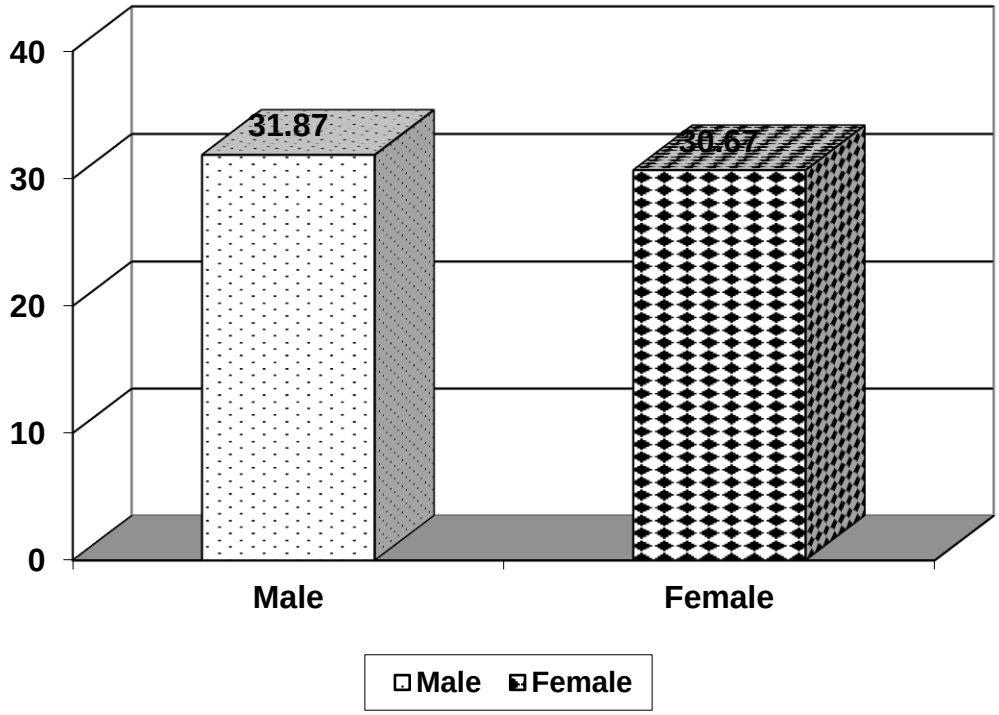

शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा स्थरण की भावना के मध्यक्रमों के बीच अन्तर लगभग 1 से अधिक है। अन्तर की सार्थकता का क्रान्तिक मान 0.79 प्राप्त हुआ जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 2.05 एवं 2.76 अपेक्षित है, से कम प्राप्त हुआ। अतः प्राप्त क्रान्तिक मान 0.05 एवं 0.01 स्तर पर असार्थक है। अतः परिणामतः शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा स्थरण की भावना में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा समर्पण की भावना का तुलनात्मक अध्ययन–

H_{04} शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा समर्पण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 4

Sex	Male	Female
N	15	15
M	29.67	35.87
S.D.	7.59	6.62
D	6.20	
SE_D	2.69	
C.R.	2.30	
	(0.05) =2.05	**(0.01) =2.76**

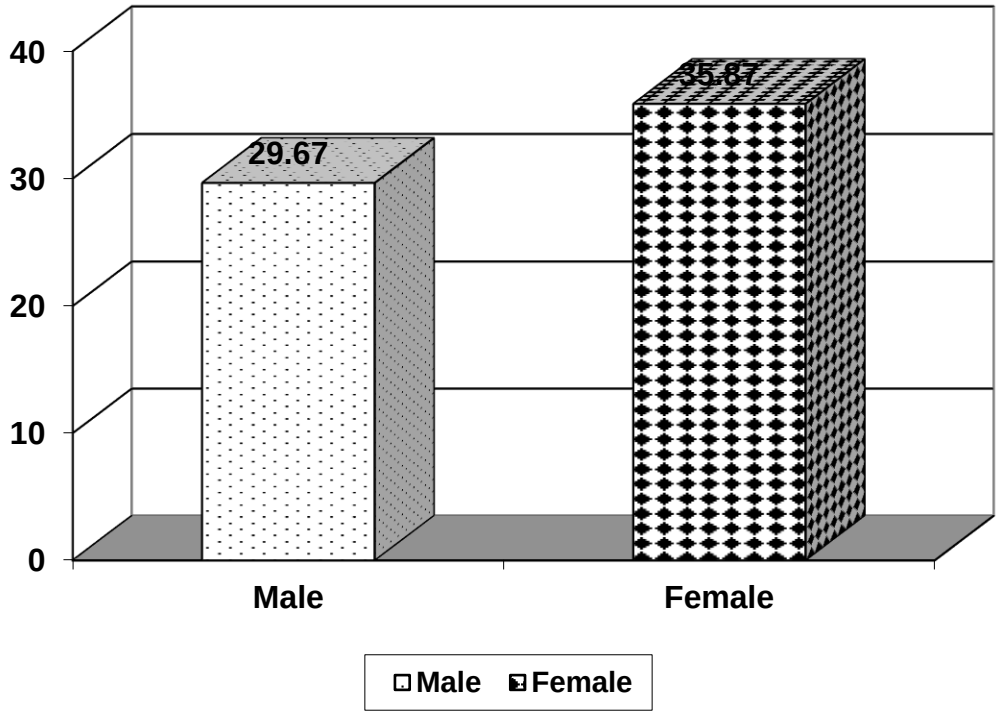

शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा समर्पण की भावना के मध्यक्रमों के बीच अन्तर लगभग 6 से अधिक है। अन्तर की सार्थकता का क्रान्तिक मान 2.30 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर 2.05 अपेक्षित है से अधिक है जबकि 0.01 स्तर पर 2.76 अपेक्षित है, से कम प्राप्त हुआ। अतः प्राप्त क्रान्तिक मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः परिणामतः शिक्षक–प्रशिक्षण में

प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा समर्पण की भावना में .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर है।

5. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा आक्रामक प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–

H_{05} शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा आक्रामक प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 5

Sex	Male	Female
N	15	15
M	36.27	29.33
S.D.	5.04	6.38
D	6.94	
SE_D	2.17	
C.R.	3.19	
	(0.05) =2.05	**(0.01) =2.76**

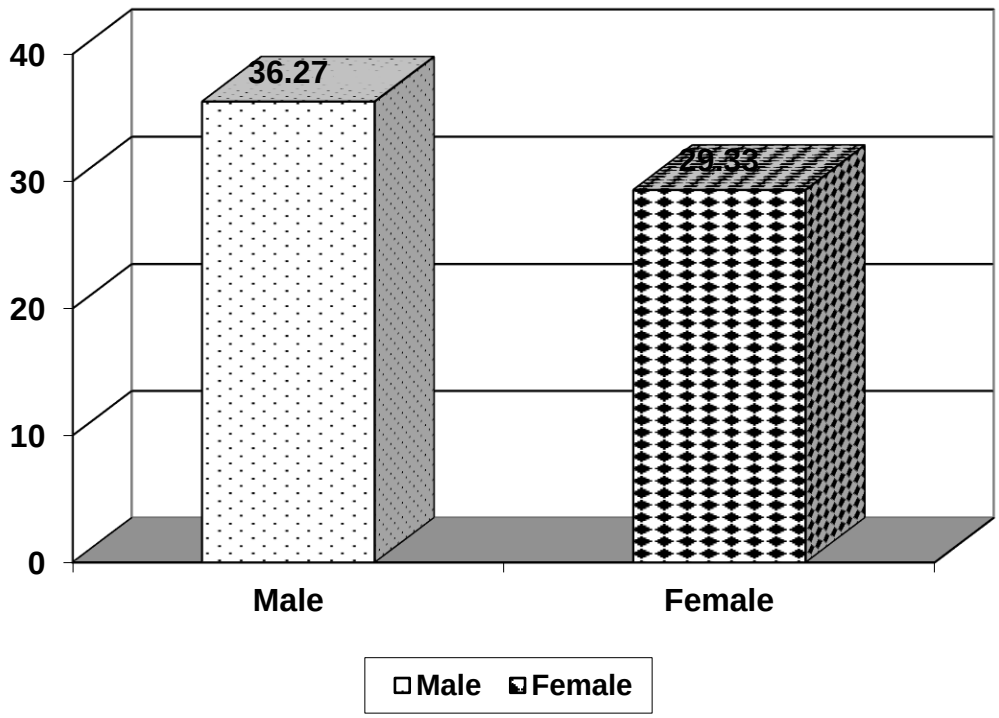

शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा आक्रामक प्रवृत्ति के मध्यक्रमों के बीच अन्तर लगभग 7 के बराबर है। अन्तर की सार्थकता का क्रान्तिक मान 3.19 प्राप्त

हुआ जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 2.05 एवं 2.76 अपेक्षित है, से अधिक प्राप्त हुआ। अतः प्राप्त क्रान्तिक मान 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिणामतः शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा आक्रामक प्रवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष–

अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

4. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य एवं उसकी विमा प्रतिगमन एवं स्थरण की भावना में अन्तर नहीं है।
5. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा समर्पण की भावना में .05 सार्थकता स्तर पर अन्तर पाया गया अर्थात् महिला प्रशिक्षुओ ंमें समर्पण की भावना पुरुष प्रशिक्षुओं की अपेक्षा अधिक है।
6. शिक्षक–प्रशिक्षण में प्रशिक्षणरत् श्रवण बाधित महिला–पुरुष प्रशिक्षुओं में नैराश्य की विमा आक्रामक प्रवृत्ति में अन्तर है अर्थात् पुरुष प्रशिक्षुओं में आक्रामक प्रवृत्ति महिला प्रशिक्षुओं की अपेक्षा अधिक है।

वर्तमान में जहाँ शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने हेतु नये संसाधनों एवं उच्च वातावरण का प्रयोग किया जा रहा है वहीं श्रवण बाधित प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण प्राप्त करने में बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है जैसे मोटी फीस, उनके अनुरूप संसाधनों का उपलब्ध न होना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की कमी होना इत्यादि उनमें तनाव का कारण होता है और यही तनाव उनके नैराश्य में बदल जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, एम0 (1985) ए स्टडी ऑफ लाइफ स्ट्रेस एमंग यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट : पी–एच.डी., मनोविज्ञान, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी; फोर्थ बुच सर्वे ऑफ एजूकेशन, पेज–1351।
- श्रीवास्तव, रजनी (1990) ग्रुप कन्फरमिटी इन स्ट्रेस ए स्टडी ऑफ स्कूल गोइंग चिल्ड्रेन इन प्रास्पेक्टिव ऑफ सरटेन डाइमेन्सन, पी–एच.डी. थेसिस, सी.एस.जे.एम. यूनिवर्सिटी, कानपुर।
- परवीन, साबिहा (1994) ए स्टडी ऑफ पर्सनालिटी पैटर्न एण्ड रोल ऑफ स्ट्रेस, एन्जाइटी एण्ड एडजस्टेण्ट इन डाइबटीज मेलिटस, पी–एच.डी. थीसिस, साइको, सी0एस0जे0एम0 यूनिवर्सिटी, कानपुर।
- हेल्मर्स, के0एफ0 एवं अन्य (1997) स्ट्रेस एण्ड डीप्रेस्ड मूड इन मेडिकल स्टूडेण्ट्स, ला स्टूडेंट्स एण्ड ग्रेजुएट स्टूडेण्ट्स, एम0सी0 गिल यूनिवर्सिटी एकैड मेडिकल, पृ0–7।
- तिवारी, साधना (1999) चिकित्सा व्यवसाय की प्रथम व अन्तिम वर्ष के छात्रों में तनाव का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध, डी0जी0 कालेज, कानपुर।
- असवाल, सीमा (2002) लाइफ स्टाइल स्ट्रेस एण्ड कोपिंग विहैवियर ऑफ वर्किंग वुमेन, पी–एच.डी. साइको, सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर।

- जायसवाल, एन.एम. (2003) द इफेक्ट ऑफ एकेडमिक स्ट्रेस ऑन कोगनिटिव एण्ड नान कागनिटिव कैरेक्टरिस्टिक ऑफ स्कूल स्टूडेण्ट एजूकेशन, पी–एच.डी., सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी राजकोट, ए0आई0यू0 न्यूज, ए वीकली जर्नरल ऑफ हायर एजूकेशन जून 2003 पेज 2003 पेज–27।
- सिंह, आभा (2004) ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ मेल एण्ड फीमेल स्टूडेन्ट ऑफ प्रोफेसनल कोर्सेज विद रिफरेन्स टू पर्सनालिटी' स्ट्रेस एण्ड एडजस्टमेन्ट, पी–एच.डी., साइको, सी.एस.जे.एम. यूनिवर्सिटी, कानपुर।
- झाझडिया, मनोज (2015). सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर छात्र– छात्राओं की कुण्ठा का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइंस रिसर्च रिव्यू*, वॉल्यूम–2, इश्शू–1, पृ0 64–69
- सिवाशंकर एवं रविन्द्रनन्दन (2016). लिंग डिफरेन्सेस ऑन एंग्जायटी, ऐडजेस्टमेन्ट, इमोशनल इंटेलिजेन्स, स्टडी हैबीट एण्ड एटीट्यूड एमंग एडोल्वसेन्स, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डियन साइकोलॉजी, 4(1), पृ0 90–101
- बंगा एवं शर्मा (2016). ए स्टडी ऑफ ऐकेडमिक एंग्जायटी ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट इन रिरलेशन टू लिंग, लोकेट एण्ड सोशल केटेगरी, इन्टरनेशनल मल्टीडिस्पिलनरी ई–जर्नल एन इन्टरनेशनल पियर रिव्यूड, रिफर्ड जर्नल, 5(4), पृ0 46–55
- बंगा, चमन लाल (2016). ऐकेडमिक एंग्जायटी ऑफ ऐडोलेसेन्स ब्वाय एण्ड गर्ल्स इन हिमाचल प्रदेश, द ऑनर्लाइन जर्नल ऑफ न्यू होरिजन्स इन एजूकेशन, 6(1), पृ0 7–12
- बाथम, जयश्री एवं हार्डिया, छाया (2017). शहरी एवं ग्रामीण किशोरों में चिन्ता तथा कुण्ठा के मध्य सहसम्बन्धात्मक अध्ययन (खण्डवा जिले के विशेष सन्दर्भ में), इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ होम साइंस, 3(2), 546–549।
- विश्वकर्मा, रामकिशोर (2018). सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के किशोरवय विद्यार्थियों के नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन, रिसर्च ऑफ रिव्यू, वॉल्यूम–7, इश्शू–9, पृ0 1–4
- सिंह, भारती (2018). सामान्य एवं दिव्यांग बालकों में नैराश्य व उसके विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन, इनोवेशन द रिसर्च कन्सेप्ट, वॉल्यूम–3, इश्शू–3, पृ0 54–56